सृजन-समीक्षा

अंतरा शब्दशक्ति का प्रकल्प

केन्द्रीय रचनाकार

• पिंकी परुथी 'अनामिका'

पिंकी परुथी 'अनामिका'

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
इंदौर,मध्यप्रदेश

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

कार्यालय: १५ नेहरु चौक वारासिवनी,जिला बालाघाट (म.प्र) ४८१३३१

शाखा: एस-२०७, नवीन भवन, इंदौर प्रेस क्लब परिसर,

इंदौर (म.प्र.) ४५२००१

दूरभाष: (कार्या.) ०७६३३-२५३१५९ (मो)९४२४७६५२५९

अणुडाक- antrashabshakti@gmail.com

अंतरताना- www.antrashabdshakti.com

मूल्य: **४०.०० रुपये**

आवरण: **मृदुल जोशी**

मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, **वारासिवनी**

वैधानिक चेतावनी : इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है | लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुरुत्पार्दित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता हैं| प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई हैं | अत: प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु प्रत्येक लेखक जिम्मेदार हैं | प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम ,पात्र,भाषाशैली,एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना हैं | किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नही |

अन्तरा-शब्दशक्ति में प्रस्तुत

"सृजक"

पिंकी परुथी 'अनामिका' का परिचय

नाम- पिंकी परुथी "अनामिका"

पति- डॉ पंकज परुथी

पिताजी- श्री हरीश चंद्र जी तनेजा

माताजी- श्रीमती निशा तनेजा

शिक्षा- बी. ई. (इलेक्ट्रिकल १९९१)

जन्म- २२/१०/७०

कार्यक्षेत्र- गृहिणी,समाजसेविका**(विशेष: महिला साक्षरता एवं बालकल्याण एवं जरूरतमंद मरीजों के लिए कार्यरत),**

लेखन : सभी विधाओं में

प्रकाशन- साझा संकलन

१) जे एम डी प्रकाशन- नारी काव्य सागर (काव्य संग्रह)

२) अर्णव कलश एसोसिएशन- सुगंध परिवेश की (काव्य संग्रह)

३) के बी एस प्रकाशन- अपूर्वा (गीत-नवगीत संग्रह)

४) के बी एस प्रकाशन- विचार मंथन (आलेख संग्रह)

५) के बी एस प्रकाशन- स्पंदन (काव्य संग्रह)

६) जे एम डी प्रकाशन-हिन्दी सागर (काव्य संग्रह)

७) नूतन साहित्य कुंज- कुंज निनाद (काव्य संग्रह) ८). मनोभाव (

काव्य संकलन) , अखिल भारतीय साहित्य परिषद, राजस्थान , ईकाई बारां द्वारा प्रकाशित ९). वूमेंस आवाज (काव्य संकलन) , अंतरा शब्द शक्ति प्रकाशन ।

पत्रिका ब्यूरो (बारां), लोकजंग (भोपाल) , वर्तमान अंकुर (नोएडा) , डालटा एक्सप्रेस (गाज़ियाबाद) से प्रकाशित पत्रिकाओं में ७० से अधिक रचनाएँ प्रकाशित (एक वर्ष में)

सम्मान-

१) विश्व हिन्दी रचनाकार मंच द्वारा- श्रेष्ठ कवयित्री सम्मान २०१७

२) अर्णव कलश एसोसिएशन द्वारा- पं माधव प्रसाद मिश्र कलम की सौगंध सम्मान

३) मातृभाषा उन्नयन संस्थान एवं अंतरा शब्द शक्ति द्वारा अंतरा शब्द शक्ति सम्मान २०१८

४) मातृभाषा उन्नयन संस्थान द्वारा - भाषा सारथी सम्मान

५) काव्यांचल द्वारा - काव्य मेघ सम्मान

६) काव्यांचल द्वारा- काव्य शिखर सम्मान ७) वूमेन्स एचीवर अवार्ड २०१८ , एंटी करप्शन फाउंडेशन ऑफ इंडिया के द्वारा।

- पिंकी परुथी "अनामिका"

"सृजक का सृजन"
तुम

शब्द भी तुम हो ,अर्थ भी तुम हो
उनसे बनी रचना भी तुम हो।
आँखें भी तुम हो, आँसू भी तुम हो
उन आँखों का नजारा भी तुम हो।

हवा भी तुम हो,साँस भी तुम हो
उन साँसों की धड़कन भी तुम हो।
गीत भी तुम हो, संगीत भी तुम हो
उन गीतों का फनकार भी तुम हो।

कर्ता भी तुम हो,कर्म भी तुम हो
उन कर्मों का भाव भी तुम हो।
धूप भी तुम हो, छाँव भी तुम हो
हर मौसम का अहसास भी तुम हो।

मैं भी तुम हो, तुम भी तुम हो।
मेरी इक पहचान भी तुम हो।
मोह भी तुम हो, माया भी तुम हो।
उस बंधन से छूटा ,वैराग्य भी तुम हो।

जिंदगी

कुछ के लिये ऐशो आराम है जिंदगी
कुछ के लिये बेनाम , बेकार है जिंदगी।
देखा जाय तो एक समय ही है जिंदगी,
कहीं ठहरी हुई तो कहीं चाल है जिंदगी।

कभी धूप तो कभी छाँव है जिंदगी
कभी सच तो कभी ख्वाब है जिंदगी।
कहीं जानी हुई सी तो कहीं अनजान है जिंदगी,
कहीं खिली खिली तो कहीं परेशां है जिंदगी।

कहीं भरपेट तो कहीं, पेट की आग है जिंदगी,
कहीं खुशनसीब तो कहीं लाचार है जिंदगी।
किसी की मुस्कुराहट तो किसी की आँसू है जिंदगी,
किसी की खुशनुमा तो किसी की बदहवास सी है जिंदगी।

कहीं बेखौफ तो कहीं डरावनी है जिंदगी,
कहीं बहार तो कहीं उजड़ी हुई है जिंदगी।
कहीं रौशन तो कहीं बुझता चिराग जिंदगी,
कहीं बंधी हुई तो कहीं आजाद है जिंदगी।

कहीं मोहब्बत का पैगाम तो कहीं बदहाल है जिंदगी,
किसी किसी के लिये बस इन्तजार है जिंदगी।
किसी की भरपूर तो किसी की आधी अधूरी है जिंदगी,
हर एक की अपनी कहानी है जिंदगी।

समय

अपना समय जो दे सको तो दे दो उपहार में।

उस बूढ़े मां बाप को
पाला है जिसने तुम्हें
बनाया है काबिल तुम्हें
न देखा भूख प्यास को
न देखा दिन और रात को
लगा दिया अपना सब कुछ
छूने को उस मुकाम को
ना चाहिए उन्हें महंगा सामान
ना चाहिए उन्हें पाक पकवान
बहू बेटे की मीठी जुबान
पर हो जाते हैं वो कुर्बान
पोते पोतियों से जो मिले सम्मान
तो पाते हैं वो खुद को धनवान
उनके पास बैठने से दो घड़ी
न होगी तुम्हें परेशानी बड़ी
तजुर्बा उनका होगा तुम्हारे बड़े काम का
देगा सुकुन तुम्हें जैसे चारों धाम का
ना मिलेंगे दुबारा मां बाप इस जहान में

अपना समय जो दे सको तो दे दो उपहार में।

कैसी है पहेली

काहे अखियां नीर बहाए रे
बिन बोले ये कुछ कह जाए रे।

कोई भी ना देखे इनको
कोई भी ना जाने इनको
मन मोरा है बस इक गवाह रे।
काहे अखियां नीर बहाए रे।

कुछ पाना हो तो कुछ खोना होवे है
पर मोहे तो खोना ही खोना होवे है
कारण ना जानूं, ना कोई समझाए रे।
काहे अखियां नीर बहाए रे।

दिन कट्या और रातां भी बीती
समय बिताऊं मरती जीती
ये कैसी है पहेली ,
जाने कौन सुलझाए रे।

काहे अखियां नीर बहाए रे।
ना कोई दर्द ना कोई चुभन
काली काली रात और भीगे नयन
किसका है इन्तजार अब कौन ये बतलाए रे।
काहे अखियां नीर बहाए रे।

मौन

मौन
चहुं ओर
भीतर को झांक
परिचय हो जाने दे
स्वयं से स्वयं का मिल
असीम आनंद का आस्वादन हो जाएगा।
दिशा
पवन की
हो विपरीत भला
गति को अपनी बढ़ाले
चीरकर तू रास्ता अब बनाले
मंजिल से मिलन तेरा हो जाएगा। बाधा
तो आएगी
आकर ही रहेगी
न डरेगा, सामना करेगा
इसे तू मन में बिठाले
बाधा से लड़कर बहादुर हो जाएगा।
निडर
होकर अब
प्रेरणा बन सबकी
दुर्बल की पीड़ा हर
शोषण से उनको अब बचाले
जन्म लेना तेरा सार्थक हो जाएगा।

बांसुरी

मुझे अपनी बांसुरी बनाले तू कान्हा
मेरी इस विनती को सुन ले तू कान्हा।

चाहे रास रचा गोपी संग
चाहे नाच तू संग बृजबाला
लेकिन अपने अधरों पर रख
मुझसे धुन निकाल तू कान्हा।

चाहे खेल तू ग्वालों के संग
चाहे गांएं चरा तू कान्हा
लेकिन अपनी अचकन में तू
मुझको संभाल कर रख तू कान्हा।

चाहे वास कर तू मथुरा
या फिर रहे तू वृंदावन
कभी जाए तू द्वारका लेकिन
संग रखना हमेशा मुझे तू कान्हा।

कुछ पन्ने

हवा के झोंके से कुछ पन्ने आज जमीं पर गिरे
बहुत पुराने,कुछ खाली , कुछ आधे लिखे हुए

कुछ मुड़े हुए,कुछ जुड़े हुए
कुछ फटे हुए भी मिले
एक एक को बटोरा,कुछ को जोड़ा ,
कुछ को फाड़ा कुछ बिखर गए,

फिर भागी,फिर इकट्ठा किया,
कुछ ढूँढा,कुछ पाया
सब में वो ही,हाँ वो ही,
लंबी साँसें ,तेज धड़कन,ये क्या हुआ

सबको आज फिर खुद ही उड़ा दिया,
क्यूँ पता नहीं इल्जाम हवा को भी ना दिया,
खुद पे ही लिया कुछ पन्ने
जो आज जमीं पर गिरे वो छूट गए,

वो उड़ गए,वो जाने कहाँ अब पहुँच गए
कुछ पन्ने जो आज जमीं पर गिरे।

"सृजन की समीक्षा"

1.

अंतरा शब्दशक्ति में **" सप्ताह के कवि"** के रूप में पिंकी परूथी की रचनाओं को पढ़ने में एक अलग ही आनंद की अनुभूति हुई मुझे।

पटल की संचालक, उस पर नियमित लेखनकिसी के लिए भी गर्व...., गौरव का विषय और शायद कभीकभी ईर्ष्या का विषय भी हो सकता है। -

जो अंतरा परिवार में शामिल होना अपनी उपलब्धि और सबका सान्निध्य मिलना अपना सम्मान मानती हो, वह असाधारण रूप से विनम्र होगी, ऐसा मैं मानती हूँ, यद्यपि व्यक्तिगत रूप से अभी मैं उनसे मिली नहीं हूँ।

दोनों बच्चों के बाहर जाने के बाद एक मित्र के कहने से शुरू हुई इनकी लेखन यात्रा किस तीव्र गति से चल रही है यह इनकी रचाओ को देखने से ही पता चल जाता है।

पहली ही रचना **"तुम"** पाठक को आध्यात्मिकता की ओर ले जाती है जिसमें प्रेम का उदात्त स्वरूप दृष्टिगोचर होता है, तो दूसरी रचना **"जिंदगी" की अंतिम पंक्ति " हर एक की अपनी कहानी है** जिंदगी" मानो मानव जीवन का सार देती दिखाई देती है।

तीसरी रचना बहुत ही मार्मिक ....**वृद्धजनों की उपेक्षा को दिखाती हुई और उपहार में उन्हें अपना समय देने को कहती हुई**जो आज की सबसे बड़ी .... आवश्यकता है। कहीं प्रतीक्षा है, तो **कहीं स्वयं से स्वयं का परिचय होने की ललक**, कहीं कान्हा की भक्ति में रचाबसा बाँसुरी बन कर सदा कान्हा के - साथ रहने को मन, तो **कहीं जीवन के बिखरे पन्नों को समेटने की बेचैनी** .... कोई भी विषय, घटना इनकी दृष्टि से छूटती नहीं लिखने से और....**यही गुण रचनाकार की लेखन यात्रा में उसके विकासपथ को प्रशस्त करता चलता - है।**आप इसी तरह से सजग और पैनी दृष्टि रख कर लिखती रहें।

शुभकामनाएँ ।

डा० भारती वर्मा बौड़ाई

2.

आदरणीया पिंकी जी केंद्रीय रचनाकार के रूप में आपका हार्दिक स्वागत है। एक उम्दा रचनाकारा के साथ साथ आप एक बहुत अच्छी समन्वयक भी हैं । **सृजन के साथ साथी सृजनकारों के हाथ थामकर हिंदी साहित्य के उत्कर्ष के लिये समर्पित रहना आपकी पहचान है** । आपके इस समर्पण और समन्वय शक्ति को नमन ।

1. रचना में **एक सूफ़ियाना एहसास** उभर कर आ रहा है । प्यार हो या ईश्वर की प्रार्थना जब तक आत्मा से संबंध नहीं होगा तब तक अरदास अधूरी, मुहब्बत अधूरी । प्यार सच्चा हो, या ईश्वर की भक्ति सच्ची हो हर जगह.., हर चीज में वही वही नज़र आता है यूँ लगता है कि स्वयं में भी वह .. विद्यमान है । सधी हुई,बंधी हुई और गहरा भाव लिये हुए उम्दा रचना हुई है ।

2.**वाकई ज़िन्दगी में न जाने कितने आयाम होते हैं** । कभी नकारात्मक तो कभी सकारात्मक । हर व्यक्ति की ज़िंदगी अपने आप में अलग और नयी कहानी है । ज़िन्दगी का रास्ता ऐसा ही है उतार के बाद चढ़ाव और फिर उतार ।ज़िंदगीनामा बताती हुई एक अच्छी रचना ।

3.बुढ़ापे में माँ बाप के लिए **संतान का पास बैठ कर बातें करने से ज्यादा बहुमूल्य उपहार कुछ नहीं हो सकता** । माँ बाप के भावों को अभिव्यक्त करता उत्तम सृजन ।

4/5/6/7-आपकी अन्य रचनायें हृदय की विभिन्न भाव क्षेत्रों तक पहुंचती है । **कहीं विरह का भाव कहीं प्रेरक एवं अनुकरणीय संदेश तो कहीं वृंदावन से श्रीकृष्ण का सौंदर्य देखने को मिला, सृजन के विभिन्न आयामों का छूते हुए आपकी अंतिम रचना तक पहुँचे जो अपने आप में आपका श्रेष्ठ सृजन है ।** भावों के साथ सहज शब्दों का उपयोग सृजन को तरल कर हृदय में उतारता जाता है । पुरानी यादें या बीते हुए पल इन पन्नो की तरह ही होते हैं ,कोई कोरा, कोई बहुत कुछ लिखा हुआ । कोई पन्ना समय की हवा में उड़ कर कहीं दूर चला जाता है तो कोई मन की।जमीन या दीवारों से सटा हुआ, चिपका रहता है । **गहरे भाव, उत्कृष्ट सृजन , इस रचना से आपने अपनी**

एक खूबसूरत शैली का परिचय दिया ।
आपके स्वस्थ और उज्ज्वल भविष्य की कामना के साथ पुनः **बधाई ।**

हेमन्त बोर्डिया

3.

सच कहूँ तो पहले पहल मुझे लगा किसी आदिवासी बालिका ने , ढेर सारी शिक्षा प्राप्त कर अपना नाम आधुनिक परिवेश से जोड़ लिया । ये तो हुई परिहास की बात...

आत्मकथ्य से पता चलता है **महाकाल की नगरी की ज्योत्स्ना, बारां की पिंकी हुई** । बेहतरीन शैक्षणिक परिवेश, कलात्मक अभिरुचियाँ । सृजन के बीज हमेशा ही हम सब में निहित होते हैं । उचित अवसर पाकर पुष्पित पल्लवित होना एक बीज की नियति है ।

इतने कम समय में इतना लिख लेना स्वान्त सुखाय के लिए तो ठीक है। उन्ही का बारम्बार परिमार्जन, उन रचनाओं को दूसरों की तुला के योग्य बनाएगा । **अंतराशब्दशक्ति परिवार से स्नेह की अभिव्यक्ति अकृत्रिम जुड़ाव - की कहानी है ।**

सृजक का सृजन-: तुम हम और तुम **समर्पण और विश्वास की अनथक कहानी** है । धूपछाँव-, मोहमाया-, साँसधड़कन क्या क्या नही है प्रिय । -

दूसरी रचना, **जिन्दगी को परिभाषित करने का सफल प्रयास** है ।

कोई आयाम न छूटे, तो मुक़म्मल है ज़िंदगी ।

तीसरी रचना **माता पिता के प्रति सन्तानों के कर्तव्य का आवाहन** है ।

कवि मन बारीक़ी से सोचता और देखता है,इर्द गिर्द के परिवेश को ।

चौथी रचना आँखों से **रिसती वेदना का आख्यान** है । किसी अंजान आगन्तुक का इंतज़ार सा शायद । परेशान न हों इनकी तो आदत ही बहना है ।

पांचवी रचना मौ**न और अंतर्निहित शक्तियों को आवाज़ देती हुई रचना** है। सचमुच बाधाएँ और उनसे निबटने की तकनीक, हमारा मैयार तय करती हैं ।

छठी रचना **आराध्य को समर्पण की कविता** है, एक सतत दृष्टिपात का आवेदन।

सातवीं रचना **हवाओं ने पन्ने ज़मीं पर गिरा दिए थे तो ये एक दैवीय संकेत था उन्हें सहेज लेने का । फिर से उड़ा देना कोई समझदारी न थी** ।।बचपन में समझाया होगा न शिक्षकों ने कि अंतिम 15 मिनिट पुनरावलोकन के लिए रखना । **आपाधापी में कभी कोई कीवर्ड छूट जाता है** ।
शानदार सृजन माँ शारदे सहाय हों **।थोड़ा पढ़ने की आदत आपकी मिट्टी को गूँथकर, और भी मुलायम करेगी** । शुभकामनाएँ । जय हो,विजय हो।

ब्रजेश शर्मा विफल,झाँसी

4.

वाह आ पिंकी जी आपकी आत्मकथा पढ़ी, बहुत लम्बे अंतराल के बाद आप अपनी रूचि के विषय को छू पाए हो । **जिस भी सज्जन ने आपको लिखने की सलाह दी बिलकुल सही दी** । आप अपने अनुभवों को शब्दों में ढाल कर कविता में पिरो सकते हो, अकेलापन भी दूर हो जाएगा, आपकी रुचि का कार्य भी होता रहेगा, और समाज को सन्देश भी दे सकते हो । यानी एक पंथ अनेकों काम, आपको ईश्वर में छोटा और खुशहाल परिवार दिया है, **कामना है कि आपके परिवार में खुशियाँ डेरा जमाए रहें** । बच्चों को कामयाब बनाने में आपके अथक प्रयास को नकारा नहीं जा सकता, अतः आपके प्रयासों को सादर नमन ।
आपकी कविताएं पढ़ीं, आपकी कविताओं में जो भाव हैं उत्तम है। वैसे तो आपकी सभी कविताएं अच्छी और भाव पूर्ण हैं लेकिन मे**रे मन को छूने में आपकी तीसरे क्रम की कविता जो बुजुर्गों के जज्बातों को बयाँ कर रही है, और सातवें क्रम की कविता जिसमे आपने जिंदगी के भावनाओं को समेटे हुए अपनी किताबडायरी के पन्नों का जिक्र किया है/, ये दोनों मुझे अति उत्तम लगी,...।**
ईश्वर से कामना है कि आपका जीवन स्वस्थ एवं खुशहाल रहे, और माँ शारदे से विनती है कि **आपकी लेखनी से भावपूर्ण और संदेशात्मक रचनाएं सृजित होती रहे।**

अनिल चिंतित

5.

व्हाट्सप अंतरा पर **सृजकसमीक्षा विशेषांक-सृजन/** में पिंकी परुथी 'अनामिका' जी को मेरा नमन।**पोस्ट तैयार करते समय ही परिचय मन को छू गया जब पढ़ा कि उपलब्धि अंतरा से जुड़ना और सम्मान अंतरा का सानिध्य, इसके लिए नम आंखों से बहुत बहुत आभार** । आत्मकथ्य प्रेरक है **ईश्वर आपको सुख समृद्धि और यश प्रदान करे**, और लेखनी दिन प्रतिदिन ऊंचाइयों पर पहुँचे यही शुभकामनाएं। सभी रचनाएं अच्छी लगी।

1) शब्द भी तुम हो ,अर्थ भी तुम हो
उनसे बनी रचना भी तुम हो। **बेहतरीन पंक्तियाँ**
2) कहीं भरपेट तो कहीं, पेट की आग है जिंदगी,
कड़ुआ सच प्रस्तुत करती हुई पंक्तियाँ
3) ना मिलेंगे दुबारा मां बाप इस जहान में
अपना समय जो दे सको तो दे दो उपहार में।
आदर्श प्रस्तुत करती हुई पंक्तियाँ।
4) दिन कट्या और रातां भी बीतीसमय बिताऊं मरती जीती ये कैसी है पहेली, जाने कौन सुलझाए रे।
सुंदर विरह गीत।
5) स्वयं से स्वयं का मिलना
असीम आनंद का आस्वादन हो जाएगा।
दार्शनिक अंदाज़।
6) मुझे अपनी बांसुरी बनाले तू कान्हा
कान्हा से मनुहार सुंदर भाव।
7) कुछ ढूँढा,कुछ पाया
सब में वो ही,हाँ वो ही,..
समर्पण की पराकाष्ठा।

सभी रचनाएं अच्छी लगी आप यूं ही लिखती रहें और सफलता आपके कदमों में हो पुनः शुभकमनाएँ,..

प्रीति सुराना, वरसिवनी

अन्तरा-शब्दशक्ति के व्हाट्सअप एवं फेसबुक समूह में १३ नवम्बर २०१६ दिन रविवार से हर रविवार को 'सृजक-सृजन-समीक्षा विशेषांक' आरम्भ किया गया जिसमें 'सृजक' का परिचय, 'सृजक का सृजन' और पाठकों की भूमिका में समूह के अन्य सभी सदस्यों द्वारा की गई 'सृजन की समीक्षा' को अन्तरा-शब्दशक्ति के फेसबुक पेज और समूह पर सहेजा गया है। अब तक वरिष्ठ और नवोदित रचनाकारों सहित लगभग ६५ रचनाकारों को प्रस्तुत किया जा चुका है और आगे भी गतिविधि सतत क्रियान्वित है।

'सृजन-समीक्षा' एक प्रयास है 'सृजक के सृजन को समीक्षा सहित' पाठकों तक वेबसाइट पर ईबुक और मुद्रित पुस्तकों के माध्यम में महत्वपूर्ण दस्तावेज की तरह सहेजने का। आशा है यह महत्वपूर्ण दस्तावेज सृजक और साहित्य जगत दोनों के लिए अनमोल धरोहर बनेगा।

अनंत शुभकामनाओं सहित।

डॉ. प्रीति सुराना

यदि आप अंग्रेजी में हस्ताक्षर करते हैं तो निवेदन है कि 'हिन्दी में हस्ताक्षर करें', आपकी यह छोटी-सी कोशिश हिन्दी को राजभाषा से राष्ट्रभाषा बनाने में अमूल्य योगदान देगी ।

सहयोगी संस्थान

हिन्दीग्राम भाषा समन्वयक
www.hindigram.com

मातृभाषा उन्नयन संस्थान (पंजी.)
हिंदी भाषा के विकास हेतु प्रतिबद्ध
www.matrubhashaa.org

मातृभाषा वैचारिक महाकुम्भ
www.matrubhashaa.com

अंतरा शब्दशक्ति प्रकाशन

१५ नेहरू चौक, मेन रोड वारासिवनी, जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१

संपर्क: ९४२४७६५२५९ । अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com

अन्तरा शब्दशक्ति

www.antrashabdshakti.com